بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-26.01.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन तथा विश्व युद्ध से बचने के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 26 जनवरी 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को युद्ध में जो घाव लगे थे उनके विवरण में कुछ रिवायतें इस प्रकार हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी. की रिवायत के अनुसार उस अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का प्रकोप उस व्यक्ति पर अधिक हो जाता है जिसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के रास्तें में मार दिया हो तथा अल्लाह तआला का प्रकोप उस क़ौम पर अधिक हो जाता ह जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा ख़ून से भर दिया हो।

तबरानी की रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ख़्मी हुए तो फ़रमाया- उस क़ौम पर अल्लाह का प्रकोप अत्यधिक हो जाता है जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख पर घाव लगाए, फिर थोड़ी देर रुक कर फ़रमाया- ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को क्षमा कर दे क्यूँकि वह नादान (मूढ़) है। अतएव आप स. की दयाशीलता जो अल्लाह तआला के रंग में सम्पूर्ण रूप से रंगी हुई थी, उस अवस्था में भी छा गई जबकि आप स. को घाव लगे थे तथा आपका ख़ून बह रहा था और आप स. ने फिर यह दुआ की, ऐ अल्लाह! यह जो अत्याचार कर रहे हैं, ये अज्ञानता एवं मूर्खता के कारण कर रहे हैं, इनको क्षमा कर दे, इनको इनकी ग़लतियों के कारण यातना न देना- اَللّٰھُمَّ صل علیٰ محمد وعلیٰ آل محمد कैसी स्नेह एवं प्रेम से परिपूर्ण अभिव्यक्ति है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी. बयान करते हैं कि मानो मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अब भी देख रहा हूँ कि नबियों में से एक नबी का हाल आप स. सुना रहे हैं जिसको उसकी क़ौम ने मार

मार कर लहूलुहान (रक्तरंजित) कर दिया था। वे अपने चेहरे से ख़ून मूँछ रहे थे तथा कहते जाते थे कि ऐ अल्लाह, मेरी क़ौम को क्षमा कर दे क्यूँकि वे नहीं जानते।

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने भी सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में विस्तार पूर्वक लिखा है कि उस तंग रास्ते पर पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ी. की सहायता से अपने घाव धोए तथा जो दो कड़ियाँ आप स. के पवित्र चेहरे में चुभ गई थीं वे अबू उबैदा बिन अलजर्राह रज़ी. ने बड़ी कठिनाई से अपने दांतों के साथ खींच खींच कर बाहर निकालीं यहाँ तक इनको निकालने के प्रयास में उनके दो दांत भी टूट गए। उस समय आप स. के ज़ख़्मों से ख़ून बह रहा था और आप स. इस ख़ून को देख कर खेद पूर्वक फ़रमाते थे- كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ خَضَبُوْا وَجْهَ نَبِيِّهِمْ بِالدَّمِ وَهُوَ يَدْعُوْهُمْ إِلَى رَبِّهِمْ किस तरह मुक्ति पाएगी वह क़ौम जिसने अपने नबी के मुंह को उसके ख़ून से रंग दिया, इस अपराध में कि वह उन्हें ख़ुदा की ओर बुलाता है। इसके बाद आप स. थोड़ी देर के लिए चुप हो गए तथा फिर फ़रमाया-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ अर्थात- ऐ मेरे अल्लाह, तू मेरी क़ौम को माफ़ कर दे क्यूँकि उनसे यह अपराध अज्ञानता एवं मूर्खता के कारण हुआ है। रिवायत आती है कि इसी अवसर पर क़ुर्आन की यह आयत नाज़िल हुई- لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ अर्थात यातना देने तथा क्षमा करने का मामला अल्लाह के हाथ में है, इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं, ख़ुदा जिसे चाहेगा माफ़ करेगा तथा जिसे चाहेगा अज़ाब देगा।

फ़ातिमातुज़्ज़ोहरा रज़ी. जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में भयावह सूचनाएँ सुन कर मदीने से निकल आई थीं, वे भी थोड़ी देर के बाद ओहद के मैदान में पहुंच गईं और आते ही आप स. के घावों को धोना शुरु कर दिया परन्तु ख़ून किसी भांति बन्द होने में ही नहीं आता था। अन्ततः हज़रत फ़ातिमा रज़ी. ने चटाई का एक टुकड़ा जला कर उसकी राख आप स. के घाव पर बांधी, तब जाकर कहीं ख़ून थमा। दूसरी महिलाओं ने भी इस अवसर पर ज़ख़्मी सहाबियों की सेवा करके पुण्य प्राप्त किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस घटना को इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि ओहद के युद्ध के अवसर पर एक पत्थर आप स. के कवच पर आ लगा तथा उसके कील आपके सिर में घुस गए। आप स. मूर्छित होकर उन सहाबियों के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे तथा उसके बाद कुछ अन्य सहाबियों रज़ी. के शव आप स. के पवित्र शरीर पर जा गिरे तथा लोगों ने यह समझा कि आप स. मारे जा चुके हैं, परन्तु जब आप स. को गढ़े से निकाला गया तथा आप स. को होश आया तो आप स. ने यह नहीं समझा कि मुझे दुशमन ने ज़ख्मी किया है, मेरे दांत तोड़ दिए हैं तथा मेरे रिश्तेदारों, परिजनों तथा दोस्तों को शहीद कर दिया है बल्कि आप स. ने होश में आते ही दुआ की- رَبِّ اغفر لِقومِي فإنهم لا يعلمون मेरे रब, ये लोग मेरे स्तर को नहीं पचान सके इस लिए तू इन्हें क्षमा प्रदान कर दे तथा इनके अपराधों को क्षमा कर दे।

ओहद के युद्ध में फ़रिश्तों के आकर लड़ाई करने के बारे में भी वर्णन मिलता है।

हज़रत सअद बिन वक़्क़ास रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने ओहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाँए और बाएँ दो आदमी देखे, उन पर सफ़ेद लिबास था। बड़ा घमासान का युद्ध कर रहे थे। मैंने उन दोनों को न उससे पहले देखा था, न उसके बाद देखा, अर्थात- जिबरईल अलै. तथा मीकाईल अलै।

अल्लामा बेहक़ी ने उर्वा से रिवायत किया है कि अल्लाह तआला ने उनसे सब्र (धैर्य) एवं तक़्वा (ईश्प्रायणता) पर वादा किया था कि पाँच हज़ार निरन्तर आने वाले फ़रिश्तों के द्वारा उनकी सहायता करेंगे, तथा अल्लाह तआला ने ऐसा ही किया, परन्तु जब उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश की अवहेलना की तथा सैन्य पंक्तियों को छोड़ दिया तथा तीर चलाने वाले दल ने अपने स्थान को छोड़ कर दुनिया प्राप्त करने का निश्चय किया तो उनसे फ़रिश्तों की सहायता वापस उठा ली और अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित फ़रमाई कि निःसन्देह अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच कर दिखाया, जब तुम उसके आदेश से उनकी जड़ काट रहे थे। मुहम्मद बिन साबित बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के दिन फ़रमाया- ऐ मुस्अब, तू आगे बढ़। तो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी. ने निवेदन किया- ऐ अल्लाह के रसूल स, मुस्अब तो शहीद नहीं कर दिए गए। आप स. ने फ़रमाया- बिल्कुल परन्तु एक फ़रिश्ता उनके स्थान पर भेज दिया है तथा उनका नाम उसको दे दिया गया है। अल्लामा इब्ने असाकर ने सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. से रिवायत किया है, वे फ़रमाते हैं कि ओहद के दिन मैंने स्वयं देखा कि मैं तीर चलाता हूँ तथा उन तीरों को मेरे पास सफ़ेद कपड़ों वाला सुन्दर सा व्यक्ति वापस ले आता था। मैं उसको नहीं जानता था, यहाँ तक उसके बाद मैं समझता था कि वह फ़रिश्ता था।

अपने एक ख़ुत्बः में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने भी यह घटना बयान की है कि सहाबी बयान करते हैं कि बदर के युद्ध में जब फ़रिश्ते देखे गए तो उनके सिरों पर काले रंग की पगड़ियाँ थीं तथा उनका लिबास एक जैसा था। जब रिवायत जमा हुई हैं तो वे आश्चर्य चकित रह गए किन्तु जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने مُسَوِّمِيْنَ की तफ़सीर फ़रमाई थी, ठीक उसी प्रकार हुआ। इसी प्रकार ओहद की लड़ाई में जो फ़रिश्ते दिखाई दिए उनके सिरों पर निशान के रूप में लाल पगड़ियाँ थीं। लाल रंग में कुछ दुःख का संदेश भी था, क्यूँकि जितना दुःख सहाबा रज़ी. को ओहद की लड़ाई में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घावों के कारण पहुंचा वैसा दुःख आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूरे जीवन काल में कभी सहाबा रज़ी. को नहीं पहुंचा। एक दुःख के बाद दूसरे दुःख की सूचना उनको मिली तथा वे दुःखों से निढाल हो गए। अतः इस युद्ध में फ़रिश्तों के निशान को दर्शाने के लिए ऐसा रंग चुना गया जिसमें दुःख तथा ख़ून एवं कष्ट का आयाम सम्मिलित था।

सहाबियों के दृढ़ता पूर्वक जमे रहने तथा जान की बाज़ी लगाने की भी अनेक घटनाएँ हैं कि किस तरह उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा में अपने प्राणों की बलि दी। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. इस बारे में लिखते हैं कि उस समय अत्यंत घोर युद्ध हो रहा था तथा मुसलमानों के लिए एक कठोर परीक्षा एवं परख का समय था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की

सूचना सुन कर अनेक सहाबी साहस खो चुके थे तथा हथ्यिार फेक कर मैदान से हट गए थे। उन्हीं में हज़रत उमर रज़ी. भी थे। अतः ये लोग युद्ध के मैदान में एक ओर बैठे थे कि ऊपर से एक सहाबी अनस बिन नज़र अन्सारी रज़ी. आ गए तथा उनको देख कर कहने लगे- तुम लोग यहाँ क्या करते हो? उन्होंन जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहादत पाई, अब लड़ने से क्या लाभ? अनस रज़ी. ने कहा- यही तो लड़ने का समय है ताकि जो मौत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाई वह हमें भी मिले और फिर आप स. के बाद जीवन का क्या आनन्द? और फिर उनके सामने सअद बिन मुआज़ रज़ी. आए तो उन्होंने कहा कि सअद! मुझे तो पहाड़ी से युद्ध की सुगन्ध आ रही है। यह कह कर अनस रज़ी. दुशमन की सेना में घुस गए तथा लड़ते लड़ते शहीद हुए। युद्ध के बाद देखा गया तो उनके शरीर पर अस्सी से अधिक घाव लगे थे तथा कोई पहचान न सकता था कि यह किसका शव है, अन्त में उनकी बहिन ने उनकी उंगली देख कर पचान की।

हज़रत मुस्ले मौऊद रज़ी. ने भी उनकी शहादत का वर्णन फ़रमाया है। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि ओहद की लड़ाई में जब ख़ुदा तआला ने फिर मुसलमानों को ग़ल्बः दिया तथा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मालिक बिन अनस रज़ी. की खोज करो तो उनकी बहिन ने एक स्थान पर एक शव के टुकड़ों में से एक उंगली के द्वारा पहचान कर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचित किया। यह था सहाबा ए रसूल का इश्क़ ए रसूल स.। फ़रमाया- यह वर्णन आगे भी इन्शाअल्लाह जारी रहेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने इसके बाद फ़रमाया कि दुआओं में आजकल यमन के अहमदियों की लिए भी दुआ करें, वे आजकल अनेक कठिनाइयों से पीड़ित हैं। इसी तरह मुस्लिम उम्मा के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला इनमें एकता एवं इकाई पैदा करे तथा बुद्धि एवं समझ दे। दुनिया की सामान्य स्थिति के लिए भी दुआ करें, बड़ी तेज़ी के साथ युद्ध की ओर बढ़ रही है, अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अंत में दो मृतकों हाफ़िज़ डा. अब्दुल हमीद गामांगा साहब, नायब अमीर जमाअत सीरालियोन तथा ताहिरा नज़ीर बेगम साहिबा पतनी चौधरी रशीदुद्दीन साहब मुरब्बी सिलसिला के सद्गुण बयान फ़रमाए तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया तथा दुआ की- अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत एवं रहम का सलूक फ़रमाए, इनके बच्चों को भी नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ
يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131